Indian Streams Research Journal
International Recognized Multidisciplinary Research Journal

ISSN 2230-7850 Impact Factor : 3.1560 (UIF) Volume - 6 | Issue - 1 | Feb - 2016

# लोकतंत्र में मी डया की भू मका

बी. डी. माशेरे
सी. के. गोयल महा वद्यालय, दापोड़ी, पुणे.

## पृष्ठभू म :

पछले कुछ वर्षों में मी डया के संपूर्ण स्वरूप में तेजी से परिवर्तन हुआ है । सूचना क्रांति एवं तकनीकी प्रगतिशीलता के कारण मी डया की पहुंच व्यापक हुई है । अन्य क्षेत्रों की तरह ही मी डया भी उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण की प्र क्रया से प्रभा वत दिखाई देता है । शुरुआती दौर में केवल सरकारी स्वा मत्व तक सी मत चैनलों की संख्या की तुलना में निजी स्वा मत्व के समावेश के कारण बहुत अ धक बढ़ौत्रि हुई है । केवल चैनल ही नहीं अ पतु नए-नए अखबार एवं पत्रिकाएं भी निकाली जा रही है और उनके स्थानीय एवं भाषायी संस्करणों में भी वस्तार हो रहा है । मी डया के वस्तार तथा व्यापक पहुँच को देखते हुए लोकतंत्र में उसकी भू मका अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गयी है । प्रस्तुत निबंध के माध्यम से लोकतंत्र में मी डया की भू मका पर वस्तार से वचार कया है ।

## लोकतंत्र में मी डया की भू मका :

लोकतंत्र में मी डया की भू मका पर वचार करने से पूर्व, संक्षेप में लोकतंत्र एवं मी डया की संकल्पना को समझना उ चत प्रतीत होता है :-

### लोकतंत्र :-

जहाँ अंतिम सत्ता जनता के हाथ में होती है और जनता ही अपना शासक चुनती है उसे सरल भाषा में लोकतंत्र कहा जाता हैं । अब्राहम लंकन द्वारा लोकतंत्र की परिभाषा - "जनता का, जनता के लए और जनता द्वारा शासन लोकतंत्र है" - प्रामा णक मानी जाती है।

### मी डया :-

व वध रूप में वद्यमान जानकारी तथा वचारों को कम से कम समय में एवं एक साथ अ धक से अ धक लोगों तक पहुँचाने के लए प्रयुक्त कए प्रोद्यो गकी रूप को मी डया कहा जाता है।

### लोकतंत्र के स्तंभ :-

भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था कार्यरत है जिसे जनतांत्रिक अथवा प्रजातांत्रिक व्यवस्था भी कहा जाता है । जिन चार स्तंभों पर यह लोकतंत्र खड़ा है उन्हे लोकतंत्र के स्तंभ कहा जाता हैं ।

### सरकार, वधानमंडल, न्यायपा लका तथा मी डया

लोकतंत्र की सफलता के लए इन चारों का अमूल्य योगदान समान रूप से महत्त्वपूर्ण है । मी डया ने जो सामाजिक सरोकार दिखाया है, इस कारण से उसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ होने का सम्मान प्राप्त हुआ है । मी डया में लोकतंत्र के लए बेहतर दुनिया और बेहतर भ वष्य बनाने की सर्वा धक क्षमता और शक्ति है । मी डया केवल एक नहीं, व भन्न घटक प्रोद्यो ग कर्यों का समुच्चय है ।

### मी डया के प्रोद्यो गकी घटक :-

मी डया में प्रधानता से निम्न घटकों का स क्रय समावेश दिखाई देता हैं :

### इंटरनेट, टे ल वजन, समाचार पत्र तथा रे डयो

इनमें से समाचार पत्र केवल दृक माध्यम, रे डयो केवल श्राव्य, टे ल वजन दृक-श्राव्य एवं इंटरनेट केवल दृक, केवल श्राव्य तथा दृक-श्राव्य इन तीनों रूपों में प्रयुक्त होता है । इंटरनेट इस माध्यम से ईमेल, फेसबुक, ब्लॉग, वॉट्स अप आदि के उदय के कारण आम नागरिक मी डया के प्रति काफी मात्रा में सजग हो गए हैं ।

### लोकतंत्र में मी डया की भू मका के आयाम :-

लोकतंत्र की स्थिरता, वकास में मी डया की भू मका बहुत ही अहम है । राजनीति, खेल, शक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी, भ्रष्टाचार, महँगाई, वस्थापन, आपदाएँ, सामाजिक स्वास्थ्य, स्थानीय समस्याएँ जैसे मुद्दों को वरीयता देकर एवं इनके संबंध में जनजागृति कर मी डया ने लोकतंत्र के मायने ही बादल दिए है । वास्त वक तौर पर देश तो सरकार ही चलाती है । जनता द्वारा चुनी गयी सरकार देश हित को ध्यान में लेते हुए निर्णय करती है, व भन्न योजनाएँ चलायी जाती हैं । सरकार द्वारा कए गए निर्णय कभी कभी पछली परिस्थिति को देखते हुए, कभी वर्तमान समस्याओं को देखते हुए अथवा कभी भ वष्य को बेहतर बनाने के लए कए जाते हैं । लए गए निर्णय, योजनाएँ, उपाय कारगर सद्ध होने के लए, सफल होने के लए सरकारी निर्णय, योजनाएँ सही समय पर जनता तक पहुँचना आवश्यक है । परंतु हमारे देश के व्यापक भौगोलीय क्षेत्र एवं **121** करोड़ से भी अ धक की आबादी को देखते हुए सरकार को अपने प्रत्येक नागरिक तक पहुँचना संभव नहीं है । इस स्थिति में सरकारी निर्णय, योजनाएँ जनता तक पहुँचाने का संभव सा लगता कार्य मी डया संभव करता है । मी डया आज के युग में वह शक्ति है जिसके होते और जिसके सही इस्तमाल से कुछ भी असंभव नहीं लगता है ।

जनता और सरकार के बीच संपर्क, अटूट रिश्ता एवं समन्वय लोकतंत्र के लए लाभदायक होता है । कुछ वर्ष पूर्व जनता और सरकार के बीच, संपर्क के अभाव के कारण जो दूरी बनी हुई थी उसे मटाने का कार्य मी डया ने कया है । आज कसी भी क्षेत्र में कोई भी घटना या अन्य जानकारी जनता तक कुछ ही पलों में पहुँच जाती है । यदि कोई भी घटना जन वरोधी है तो जनता की आवाज सरकार तक पहुँचाने का कार्य मी डया के माध्यम से कया जाता है । कहा जा सकता है क -

### मी डया जनता और सरकार के बीच सेतु का कार्य कर रहा है ।

कतने ही ऐसे निर्णय है जो मी डया के माध्यम से जनता की आवाज पर लए तथा बदले भी गए । लोकपाल, चुनाव प्र क्रया में सुधार हेतु पसंदीदा उम्मीदवार न होने पर मना करने का अ धकार, शक्षा का अ धकार, सूचना का अ धकार, महँगाई पर रेल कराए में वापसी आदि । इन आंदोलनों में लोगों का सहभाग तो था ले कन ये मुद्दे मी डया के उछालने के कारण यह कम कठिनाई से भी संभव हुआ है ।

लोकतंत्र में मी डया की भू मका आज से नहीं है। इसका भारत में भी बड़ा लंबा इतिहास रहा है। मात्र लोकतंत्र ही नहीं तो स्वतंत्रता प्राप्त करने में भी मी डया की अहम भू मका रही है। भारत के स्वतंत्रता सेनानी अखबारों, पत्र-

पत्रिकाओं के माध्यम से अपने क्रांतिकारी वचार लोगों तक पहुंचाते रहे और उससे और अ धक देशभक्त देश की सेवा में जुटते रहे। केसरी, मराठा, वंदे मातरम ऐसे कुछ उदाहरण है जिन्होंने देश के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण भू मका उस समय अदा की थी। यह कहा जा सकता है क मी डया ने न केवल लोकतन्त्र को संभाला है बल्कि उसकी मजबूत नींव भी मी डया ने ही बनाई है।

मी डया के घटकों के इतिहास एवं फैलाव पर वचार करने पर पता चलता है क प्रंट मी डया की शुरुवात तो **15** वीं सदी में हुई, ले कन भारत का *पहला समाचार **1780** में पत्र जेम्स ऑगस्टस हिकी द्वारा अंग्रेजी में बेंगॉल गैझेट के नाम से कोलकाता से* निकाला गया जो क केवल दो साल तक चला था । मी डया के अन्य इकाईयों की शुरुआत निम्न प्रकार हुई :

| क्र.सं. | मी डया की इकाई | भारत में संख्या (वर्ष **2013**) | भारत में आरंभ |
|---|---|---|---|
| **1** | समाचार पत्र | कुल **82237** से अ धक (दैनिक, साप्ताहिक, अन्य आव धक) | **1780** |
| २ | टेली वज़न | **792** से अ धक (निजी+सरकारी) | **15** सतम्बर **1959** |
| ३ | रे डयो | **800** से अ धक (निजी+सरकारी) | **1910** |
| **4** | इंटरनेट | **-** | **15.08.1995**(वीएसएनएल दिल्ली) |

मी डया के फैलाव को देखते हुए अब यह एकमात्र ऐसा साधन बन गया है जिसके माध्यम से हम लग भग सभी व्यक्तियों तक आसानी से पहुँच सकते हैं ।

लोकतंत्र केवल एक शासन व्यवस्था नहीं है बल्कि उसका स्वरूप अत्यंत व्यापक है । *लोकतंत्र की शुरुआत प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक परिवार से होती है । लोकतंत्र यह एक वचार है, जिसे घर-घर तक पहुँचाने का कार्य माध्यमों ने और खासकर चैनलों, समाचार पत्रों तथा रे डयो ने कया है ।* भारत में पतृसत्ताक पद्धति प्रच लत थी । घर के सभी निर्णय करने का अ धकार केवल मु खया को था । अत: देश में लोकतंत्र होते हुए भी हमारे परिवारों में कोई भी निर्णय परिवार के सभी सदस्यों से वचार वमर्श से नहीं होता था । ले कन आज स्थिति बदल चुकी है । माध्यमों पर चलने वाले अनेक समाचार, चैनलों पर चलने वाले धारावाहिकों के माध्यम से लोकतंत्र के उ चत संस्कार जनता पर हो रहे हैं । अ धक संख्या चैनल तथा प्रत्येक की पसंद भन्न होते हुए भी संध्या को जब सारा परिवार घर पहुँच जाता है तो एक कार्यक्रम देखने पर एकमत होता है अथवा कराते हैं । इन्ही छोटी-छोटी चीजों से हमारा लोकतंत्र मजबूत हो रहा है ।

लोगों को ज्ञानवान बनाने में, सजग बनाने में मी डया अपनी भू मका बखूबी निभा रहा है। आज मी डया के कारण लोग न केवल खबर जानते हैं बल्कि उसके कारण, वश्लेषण का भी संज्ञा
न रखते हैं। खबर तुरंत और वस्तार से न केवल पढ़ने, श्रवण करने से पता चलती है बल्कि देख भी सकते हैं। चुनाव के दौरान अपने पार्टी की बाते लोगों तक पहुंचाना आसान हो गया है। चुनाव के बाद उसके नतीजे भी वस्तार से लोगों के पास पहुँच जाते हैं। इसके कारण लोग हर उस खबर को जन सकते हैं जो उनके जीवन को प्रभा वत कर सकती है।

मी डया आज अनेक रूपों में मौजूद है । जो मी डया **30-40** वर्ष पूर्व केवल दूरदर्शन के नाम से लोक प्रय था; आज इतना वक सत हुआ है क उसपर चलनेवाली, प्रसारित की जानेवाली हर वधा के आधार पर चैनलों के प्रकार हो गए है । समाचार चैनल उनमें भी भाषावार चैनल, धारावाहिकों के लए चैनल, केवल गानों के लए चैनल, मॉड लंग के लए चैनल, मात्र फल्मों के लए चैनल, खाना बनाने से संबं धत चैनल, खेलों के लए चैनल उनमें भी अलग अलग खेलों के लए व शष्ट चैनल आदि आदि इतनी व वधता हुई है और इतने वकल्प लोगों के सामने खुल गए है क मुश्किल हो गया है क कौनसा चैनल देखें ।

माध्यमों की अ धकता भी अब समस्या बन गई है। माध्यमों की जनमत बदलने की शक्ति को देखते हुए यह बड़ा गंभीर हो गया है क उनमें दिखाई जानेवाली असली और नकली चीजों की पहचान करें । उदा. अनेक वज्ञापन

दिखाए जाते हैं जिनके द्वारा झूटे दावे भी कए जाते हैं । अब समस्या है क उनको इतने प्रभावी ढंग से सामने रखा जाता है क कभी कभी झूठ भी सच लगता और लोग उसमें फंस जाते हैं।

लोकतन्त्र में मी डया जितना सकारात्मक प्रभाव छोड़ता है उतना गलत प्रभाव भी डाल सकता है और यह संभावना हर समय बनी रहती है। लोकतंत्र को वह आधार भी देगा, मजबूती भी देगा ले कन वह लोकतंत्र के सामने हर समय उसे हिलाने की चुनौती भी पेश कए हुए है। चुनाओं में लोगों को गुमराह बनाने के लए इसका उपयोग हो सकता है। एक समय में करोड़ों लोगों तक पहुँचने की शक्ति एक गलत खबर को करोड़ों लोगों तक पहुंचाकर देश और लोकतंत्र का माहौल बिगड़ सकती है। कुछ लोग भड़काऊ भाषण करते हैं। कुछ लोग जान बूझकर गलतफहमी फैलाना चाहते हैं तो कभी कभी मी डया बिना उसकी जांच कए प्रसारित कर सकता है । समस्या उस समय पैदा होती है जब कसी खबर को जाने पारखे; बिना उसकी सत्यता जाने प्रसारित की जाती है और जनता पर उसका असर होता है और माहौल बिगड़ जाता है ।

पछले कुछ वर्षों में ये आरोप भी लगते आए हैं क पैसे देकर खबरे फैलाई जाती है लोगों को बदनाम कया जाता है । ये खबरे सही हो या गलत ले कन लोगों को इससे सावधान रहना चाहिए । कसी खबर को काँट-छाँट कर प्रस्तुत करना, गलत तरीकों से पेश करना, अचरज पैदा करने के लए खबर का एक ही हिस्सा दिखाना, असमंजस की स्थिति पैदा होने के बाद उसका दूसरा हिस्सा दिखाना आदि जैसे आरोप भी लगते रहे हैं। सस्ती लोक प्रयता के लए भी मी डया का प्रयोग कया जाता है। जैसे क कहा जाता है क कोई भी कानून बना नहीं क कुछ लोग उसको तोड़ने की तरकीबे सोचने में जुट जाते हैं ठीक उसी प्रकार कुछ लोग मी डया जो खा मयाँ हैं जो कमज़ोरियाँ हैं उनको अपने लाभ के लए कस तरह इस्तमल करें इस सोच में लग जाते हैं। उन लोगों को जनता की भलाई और बुराई से कुछ लेना देना नहीं होता। उनको बस अपने स्वार्थ से मतलब होता है। लोगों को चाहिए क वे इससे भी बचाने के प्रयास करते रहें।

मी डया का जितना उपयोग हम करते हैं उससे तो एक बात साफ है क हमारे जीवन पर उसकी गहरी पैठ स्था पत हो गई है। देश में लोकतंत्र की सुरक्षा भी कुछ हद तक मी डया के कब्जे में है। मी डया का मात्र लोकतंत्र मजबूत होने के लए ही प्रयोग हो और मी डया का दूसरा हिस्सा जो हानि पहुंचा सकता है उसके प्रति सजग रहे सावधानी बरती तो मी डया हमेशा वरदान ही बना रहेगा। भारतीय जनता को मी डया के प्रति सजगता और मी डया साक्षरता दिखानी होगी। कोई भी खबर सच मानने से पहले उसकी जांच परख करनी चाहिए । खबर की बजाए पहले खबर के पीछे की सच्चाई जानने की भी को शश हमेशा करनी चाहिए ।

## समापन :

हमारा भारत दुनिया का सबसे मजबूत लोकतंत्र है। भारत देश में पाई जानेवाली व वधता दुनिया के कसी भी देश की तुलना में सर्वा धक है। हमारे लोकतंत्र की यह सबसे बड़ी वशेषता व वधता ही है यहाँ व भन्न धर्मों, अन गनत जातियों, भाषाओं, संस्कृतियों, पहनावे, रीतिरिवाजों, वचारों के लोग रहते हैं। इतनी व वधता होते हुए भी हमारे देश में एकता है और यही एकता हमारे लोकतंत्र को मजबूत बनाए हुए हैं। देश की एकता को बनाए रखने में ही नहीं बल्कि उसे और अ धक मजबूत बनाने में मी डया की भू मका एक स्तम्भ की रही है। इसी की सराहना करते हुए उसे लोकतंत्र को चौथा और सबसे मजबूत स्तम्भ कहा जाता है। यह स्तम्भ लोकतंत्र की इमारत को न केवल मजबूती से थामे हुए है बल्कि उसकी नीव को भी मजबूती दिए हुए है। जनता में हर खबर पहुंचाना, लोकतंत्र के पाठ पढ़ाना, उनमें जागृति फैलाना, देशभक्ति बढ़ाना ये कार्य मी डया बखूबी करता आ रहा है। मी डया लोकतंत्र का स्तम्भ था है और बना रहेगा ले कन लोगों को चाहिए क इसका इस्तमल सावधानी से करें। अच्छी चीजे ले और बुरे, गलत और झूठे प्रभाव से बचे; मात्र इतना करने से निसंदेह हमारा लोकतंत्र मी डया के आधार पर सशक्त बना रहेगा और दृढ़तर से दृढ़तम हो जाएगा।